बुंदेलखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति : एक समीक्षात्मक अध्ययन (महोबा जिले के विशेष संदर्भ में)

प्रियंका गुप्ता
शोध छात्राए कला संकायए
महात्मा गांधी ग्रामोदयए विश्वविद्यालयए चित्रकूटए सतना (म°प्र°)

सारांश :- भारत के मध्य में स्थिति बुंदेलखण्ड अपने गौरवशाली इतिहास के लिए जाना जाता है । यहाँ के विश्व प्रसिद्ध चंदेलकालीन खजुराहो के मंदिर एवं बुंदेलखण्ड के गौरवशाली इतिहास में यहाँ की वीर महिलाओं रानी दुर्गावतीए रानी लक्ष्मीबाई इत्यादि के योगदान को कौन भुला सकता है । यद्यपि आजादी के बाद सत्ताधीशों द्वारा विकास के लिए ध्यान न देने के कारण यह क्षेत्र पिछड़ेपन का दंश झेल रहा है द्य वर्तमान में बुंदेलखण्ड क्षेत्र देश के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में से एक है । इस क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता दरए देश की औसत महिला साक्षरता दर से बहुत कम है । यद्यपि 86वें संविधान संशोधन कानून 2002 के अंतर्गत शिक्षा के अधिकार को मूलभूत अधिकार बनाने एंव सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बाद बुंदेलखण्ड की ग्रामीण महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार आया है । वर्तमान शोध पत्र में बुंदेलखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति एंव उनकी शैक्षिक स्थिति के कारण उनकी समाज में भूमिका पर केन्द्रित है ।

प्रस्तावना :- स्त्री हमारे समाज की मुख्य स्तम्भ है । यह मानव सभ्यता विकास में अहम भूमिका रखती है । हमारी संस्कृति में जो कुछ भी सुंदर हैए शुभ है कल्याणकारी हैए मंगलकारी हैए उसकी कल्पना नारी रूप में की गई है । हमारे धार्मिक ग्रंथों में स्त्री को शक्ति की साकार प्रतिमा के रूप में जाना जाता है । "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्तेए रमन्ते तत्र देवता[1] :. अर्थात यहाँ स्त्री को देवी की संज्ञा दी जाती है ।

भारत के मध्य में स्थित बुंदेलखण्ड में भी महिलाओं का गौरवशाली इतिहास रहा है । सागरए छतरपुरए चित्रकूट इत्यादि जिलों में मिले भित्ति चित्रों के अवशेष इस बात के संकेतक हैं की बुंदेलखण्ड में मानव सभ्यता का निवास पुरातन काल से है । उस समय भी स्त्रियाँ पुरुषों के साथ बराबरी से अपना योगदान करती थीं । यद्यपि समाज में महिलाओं की स्थिति वैदिक कालए से मध्यकाल होते हुये अंग्रेज़ो के आने तक बहुत कमजोर हो चुकी थी । समाज में बहुविवाहए पर्दाप्रथाए बालविवाहए सतीप्रथा इत्यादि का प्रचलन थाए महिलाओं के लिए शिक्षा भी वर्जित थी । अंग्रेजी शासन के समय समाज सुधारकों एंव सरकार के प्रयास से महिलाओं की स्थिति में सुधार तो हुये लेकिन यह केवल अभिजात्य वर्ग तक ही सीमित थे ।

भारत में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति[3]

1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
8.86%	15.35%	21.97%	29.76%	39.29%	54.16%	65.46

शोधार्थी के अध्ययन का क्षेत्र बुंदेलखण्ड भारत के मध्य में स्थित एक भौगोलिक क्षेत्र है । इसके उत्तर प्रदेश के दक्षिण के 7 जिले महोबाए बांदाए झाँसीए ललितपुरए जालौनए चित्रकूटए हमीरपुर एंव मध्य प्रदेश के 6 जिले सागरए पन्नाए छतरपुरए टीकमगढ़ए दतिया एंव दमोह आते हैं । वर्तमान में बुंदेलखण्ड शैक्षिक एंव आर्थिक रूप से पिछड़ा क्षेत्र है ।

बुंदेलखण्ड क्षेत्र में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति (प्रतिशत में)[4]:-

वर्ष	पन्ना	सागर	छतरपुर	टीकमगढ़	दतिया	दमोह	हमीरपुर	बांदा	चित्रकूट	जालौन	झाँसी	ललितपुर	महोबा
2001	47.97	54.35	39.26	40.99	56.57	47.30	40.14	36.78	50.30	49.21	50.16	32.97	36.41
2011	54.44	67.02	53.59	49.97	59.41	59.22	55.95	53.67	52.74	62प46	63.49	50.84	53.22

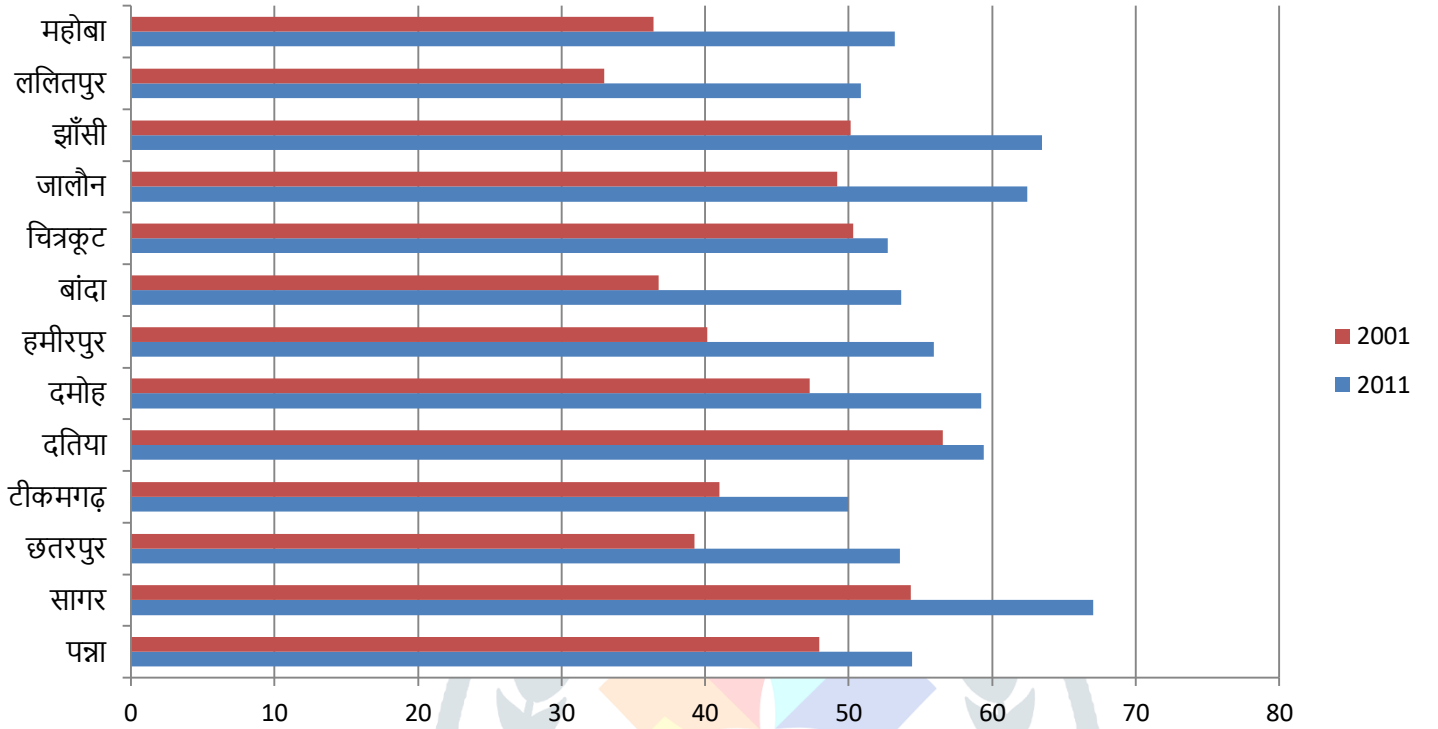

बुंदेलखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति (प्रतिशत में)[5]:-

	पन्ना	सागर	छतरपुर	टीकमगढ़	दतिया	दमोह	हमीरपुर	बांदा	चित्रकूट	जालौन	झाँसी	ललितपुर	महोबा
2011	51.79	61.04	48.09	46.39	55.91	54.53	53.08	50.22	51.03	59.85	55.71	46.78	50.11

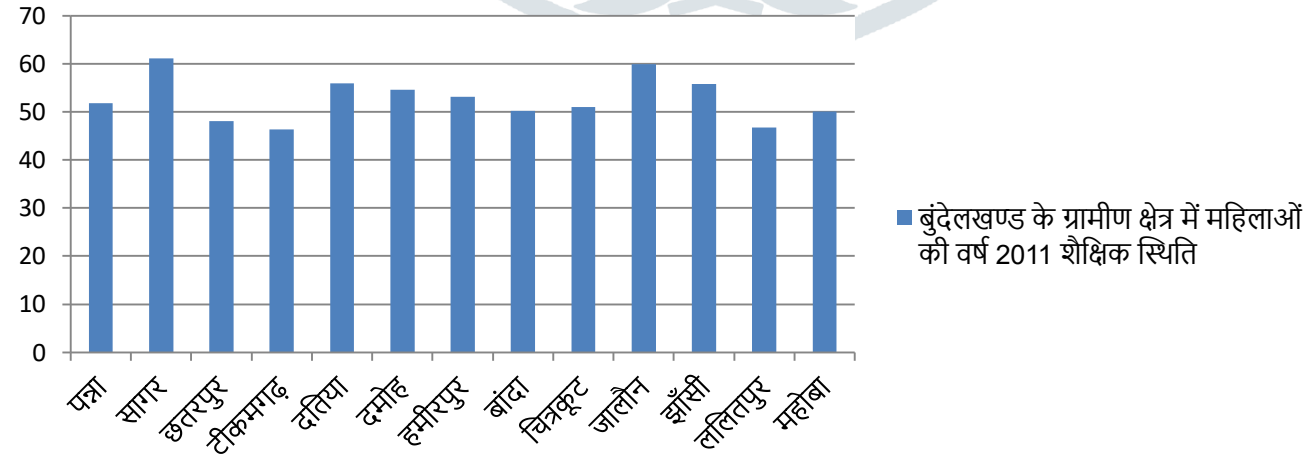

शोधार्थी के अध्ययन क्षेत्र बुंदेलखण्ड के महोबा जिले मेंए सर्वेक्षण कर के महिलाओं से उनकी शैक्षिक स्थिति एंव भूमिका जानने की कोशिश की है ।

कार्य क्षेत्र एंव शोध क्रिया विधि :- शोध का कार्य क्षेत्रए बुंदेलखण्ड के उत्तर प्रदेश राज्य का महोबा जिला है । महोबा जिले के चार विकास खंडों में से दो विकास खंडों का चयन सामान्य याद्दच्छिक प्रतिचयन के द्वारा

किया गया है । चरखारी विकास खण्ड एंव कबरई विकास खण्ड प्रत्येक से पाँच पाँच गावों का चयनए सामान्य यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा शोध के लिए किया गया है ।
प्रत्येक गाँव से पहले महिलाओं को स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा चार अलग अलग जातीय समूहों सामान्यए अनुसूचित जातिए पिछड़ा एंव अल्पसंख्य वर्ग में विभाजित करकेए महोबा जिले के सामान्यए पिछड़ा एंव अनुसूचित वर्ग के जातीय अनुपात[6] के आधार पर एंव अल्पसंख्यक वर्ग के लिए वर्ष 2011 के जनगणना में दिये आंकड़ो के आधार पर[7] कुल 20 महिलाओं के चयन में से सामान्य वर्ग से 4ए अनुसूचित जाति वर्ग से 5ए अल्पसंख्यक वर्ग से 1 एंव पिछडे वर्ग से 10 महिलाओं का चयन प्रश्नावली एंव साक्षात्कार के लिए किया गया है । इस प्रकार से दोनों विकास खंडों के दस गावों से कुल 200 महिलाओं का चयन अध्ययन के लिए किया गया है । उसके बाद इन 200 महिलाओं से प्रश्नावली एंव साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त आंकड़ों को अनुसूची बना कर अप्राचलिक सांख्यकी पद्धति के द्वारा विश्लेषण किया गया है ।

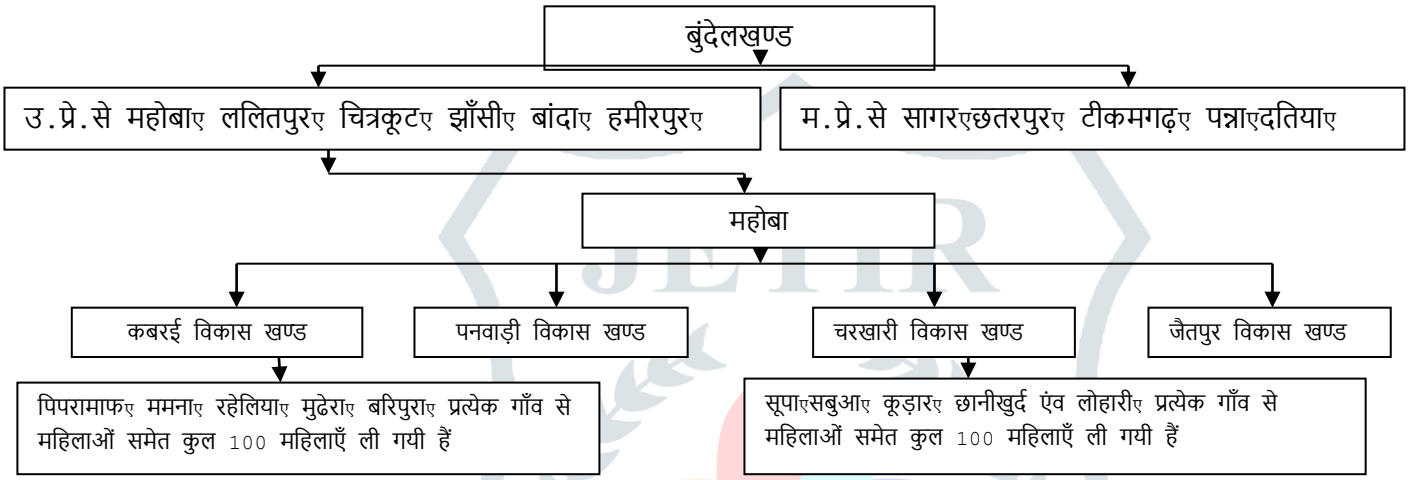

प्रतिचयन :- शोध कार्यविधि मेंए सामान्य यादृच्छिक प्रतिचयन प्रणाली एंव स्तरिकृत चयन प्रणाली प्रयोग की गई हैं द्य

सामान्य प्रतिचयन प्रणाली :- इस प्रकार की प्रतिचयन प्रणाली में नमूनों की सम्पूर्ण आबादी से आंकड़ो का यादृच्छिक चयन शामिल है । ताकि प्रत्येक संभावित नमूना होने की संभवाना सामान्य रूप से हो ।

स्तरीकृत प्रतिचयन प्रणाली :- इस प्रतिचयन प्रणाली में कुछ विशेषताओं के आधार पर नमूनों की आबादी को समूहों में बांटा जाता है । फिर प्रत्येक समूह के अंदर एक संभावना प्रतिदर्श (जैसे सामान्य यादृच्छिक प्रतिचयन) का चयन किया जाता है ।

अप्राचलिक सांख्यकी :- अप्राचलिक सांख्यकीए सांख्यकी की एक शाखा है । जो उन आंकडों के विश्लेषण के लिए प्रयोग की जाती है जो आंकडे सामान्य वितरण में व्यवस्थित नहीं होते ।

परिणाम – विश्लेषण :-

अध्ययन के दौरान एकत्रित किए गए आंकड़ों से निम्नलिखित परिणाम मिले हैं ।

शिक्षा			
		आवृत्ति	प्रतिशत
	साक्षर	103	51ण्50
	निराक्षर	97	48ण्5
	कुल योग	200	100ण्0

आपने कहाँ तक शिक्षा प्राप्त की है			
		आवृत्ति	प्रतिशत
	प्राथमिक	51	25ण्5
	हाई स्कूल	21	10ण्50
	इंटरमीडियट	18	9ण्0

	उच्च शिक्षा	13	6ण्5
	निराक्षर	97	48ण्5
	कुल योग	200	100ण्0

क्या आपकी शैक्षिक योग्यता आपके दैनिक कार्यों में उपयोगी है

		आवृत्ति	प्रतिशत
	पूर्णतःउपयोगी	34	17ण्0
	उपयोगी	53	26ण्5
	तटस्य	77	38ण्5
	अनुपयोगी	17	8ण्5
	पूर्णतः अनउपयोगी	19	9ण्5
	कुल योग	200	100ण्0

बदलते हुए परिवेश में बेटियो का शिक्षित होने से आप कितनी सहमत हैं

		आवृत्ति	प्रतिशत
	पूर्णतःअसहमत	7	3ण्5
	असहमत	2	1ण्0
	तटस्य	14	7ण्0
	सहमत	67	33ण्5
	पूर्णतः सहमत	110	55ण्0
	कुल योग	200	100ण्0

अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों के अनुसार पर यह पाया गया है की कुल महिलाओं में लगभग 50% महिलाएँ निरक्षर है । कुल महिलाओं में केवल 15.5% महिलाओं ने इंटरमीडियट या उच्च शिक्षा प्राप्त की है । ज़्यादातर महिलाएँ यह मानती हैं की महिलाओं की शैक्षिक योग्यता उनके दैनिक कार्यों के लिए उपयोगी हैं एंव ज़्यादातर महिलाएँ बदलते परिवेश में बेटियों के शिक्षित होने की पक्षधर हैं ।

निष्कर्ष एंव सुझाव :- अध्ययन के आंकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है की बुंदेलखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की साक्षारता दरए देश की साक्षरता दर से कम हैं । इस आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है की बुंदेलखण्ड के ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएँ शिक्षा में देश के अन्य भागों से पिछड़ी हुई हैं । ज़्यादातर महिलाएँ यह मानती हैं की शिक्षा उनके दैनिक जीवन में उपयोगी हैं एंव वो अपनी बेटियों को पढाना चाहती हैं इससे ये निष्कर्ष निकलता है की महिलाओं में शिक्षा के महत्व को लेकर जागरूकता है । बुंदेलखण्ड की ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा स्तर के पिछड़ेपन को देखते हुये इस क्षेत्र में शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए सरकारी एंव सामाजिक स्तर पर प्रयास किए जाने की जरूरत है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1.मनुः मनुस्मृतिए 3/55-59

2.जेराईः ए न्यूली डिसकवर्ड साइट ऑफ रॉक पेंटिंग इन सागर डिस्ट्रिक्टए मोहन लाल चधारए बसंत कुमार मोहंतए रिवर वैलि सिविलिजेसन इन छत्तीसगढ़ – न्यू रिसर्च इन इंडियन आर्किओलोजीए डिपार्टमेंट ऑफ कल्चर एंड आर्किओलोजीए छत्तीसगढ़ सरकारए रायपुर-2012।

3. भारत की जनगणना वर्ष-2011ए भारत की शिक्षा दर 1951-2011

4. भारत की जनगणना वर्ष-2011.

5. भारत की जनगणना वर्ष -2011

6. बुंदेलखण्ड°इन

7. भारत की जनगणना वर्ष -2011